SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

NŸkh lx<h lkfgR; d fodkl e i- ';keyky prqoinh dk ;kxnku

gfj'kdj Çlg jkt] हिंदी विभाग
राजीवगांधी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, लोरमी, जिला मुंगेली, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
gfj'kdj Çlg jkt] हिंदी विभाग
राजीवगांधी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, लोरमी, जिला मुंगेली, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/01/2023
Revised on : -----
Accepted on : 27/01/2023
Plagiarism : 00% on 20/01/2023

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: 0%
Date: Jan 20, 2023
Statistics: 0 words Plagiarized / 7292 Total words
Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

'kk/k lkj

किसी भी भाषा की कसौटी साहित्य के माध्यम से की जाती है। भाषा का सामर्थ्य, उसका सौंदर्य और अभिव्यक्ति की स्पष्टता का वास्तविक मूल्यांकन गद्य साहित्य से किया जा सकता है। समय के साथ छत्तीसगढ़ी गद्य साहित्य में कई विधागत परिवर्तन के साथ स्वरूपों में बदलाव आया जिसमें कहानियाँ दो पृथक दिशाओं में प्रवाहित होने लगी, जिनमें एक दिशा में लोककथात्मक वाली कहानियाँ हैं, तो दूसरी दिशा सामाजिक परिवेश को ध्यान में रखकर रचित कहानियाँ। लोककथात्मक कहानियों में पालेश्वर शर्मा रचित "सुसक झन कुररी, सुरता ले, विनय पाठक रचित "छत्तीसगढ़ी लोककथा" और शिवशेखर रचित "डोकरी के कहिनी" को शामिल किया जाता है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक कहानियों में रंजनलाल पाठक, श्यामलाल चतुर्वेदी, लखनलाल गुप्ता, कपिलनाथ कश्यप का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। लखनलाल गुप्ता रचित "सोनपान", कपिलनाथ कश्यप रचित "निबंध निसेनी", श्यामलाल चतुर्वेदी रचित "छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य", विनय पाठक रचित "छत्तीसगढ़ी साहित्य अउ साहित्यकार" जैसी रचनाओं की रचनाकर साहित्यकारों ने निबंधों और समीक्षात्मक लेखों की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किया। इसके बाद आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, अनुवाद लेखन क्षेत्र में भी छत्तीसगढ़ी साहित्यकारों ने लेखनी का प्रयोग प्रारंभ किया। इस धीमी गति के साथ शनै–शनै परंतु व्यवस्थित रूप से छत्तीसगढ़ी गद्य साहित्य का क्रमशः विकास हो रहा था, जिसके विषय में डॉ. विनय कुमार पाठक की टिप्पणी ध्यान देने योग्य है– "छत्तीसगढ़ी भाषा के लिखित साहित्य का विधिवत एवं व्यवस्थित प्रारंभ 19वीं शताब्दी से हुआ है, उसके बाद शिष्ट की तुलना में शिष्टेतर साहित्य के अधिक प्रचार के होने के कारण छत्तीसगढ़ी के शिष्ट साहित्य से लोग अपरिचित रहे एवं इस कारण से भ्रांति का सृजन हुआ। छत्तीसगढ़ी के शिष्ट साहित्य का प्रचार–प्रसार के कम होने के

कारण बहुत समय तक आम लोगों में छत्तीसगढ़ी साहित्य के प्रति एक नाकारात्मक धारणा बन गयी थी। छत्तीसगढ़ी के शिष्ट साहित्य से अवगत होने के बाद यह धुंध हटने लगा और स्थिति स्पष्ट होने लगी। प्रारंभ में छत्तीसगढ़ी साहित्य का उपहास किया जाता था। शनैः–शनैः उसमें आयी गंभीरता से लोगों को विश्वास हुआ कि छत्तीसगढ़ी में भी शिष्ट साहित्य की रचना बहुत ही अच्छे तरीके से किया जा सकता है। पद्मश्री और छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष पं. श्यामलाल चतुर्वेदीजी का जन्म 20 फरवरी 1926 को कोटमी सुनार नामक ग्राम में हुआ था, आपने छत्तसगढ़ी भाषा को प्रस्तुत शोध पत्र छत्तीसगढ़ी साहित्य को पं. श्यामलाल चतुर्वेदीजी के योगदान पर प्रकाश डालने का एक छोटा प्रयास है।

e[; 'kCn

NRrhlx<h lkfgR;] Hkk"kk] ykd&xkFkk-

çLrkouk

पं. श्यामलाल चतुर्वेदी का जन्म 20 फरवरी 1926 को बिलासपुर जिले के कोटमी गाँव में हुआ था। पिता श्री चन्दूलाल जी चतुर्वेदी गाँव के प्रतिष्ठित कृषक और धार्मिक प्रवृत्ति के इन्सान थे। छत्तीसगढ़ी लोक–गाथाओं से बालक का पहला परिचय माँ के माध्यम से हुआ।

पं. श्यामलाल चतुर्वेदीजी साहित्य का गद्य की विभिन्न विधाओं की विवेचना को निम्न आधार पर किया जा सकता है:

1. कथा साहित्य के दृष्टिकोण से
2. नादय साहित्य के दृष्टिकोण से
3. गद्य की अन्य विधाओं के दृष्टिकोण से

1. **dFkk lkfgR; d: –f"Vdks.k ls** काव्य की अपेक्षा कथा साहित्य का प्रभाव क्षेत्र विस्तृत होता है। आम आदमी कविता के प्रति उतना रुझान प्रदर्शित नही करता जितना कहानियों के प्रति, इसका कारण कथाओं के माध्यम से भावाभिन्यक्ति की सरलता है। डॉ. त्रिभुवन सिंह ने इस संबध में लिखा है "उपन्यास और कहानी जैसे गद्य रुपों के माध्यम से भावाभिव्यक्ति जितनी सरलता पूर्वक सम्भव हो जाती है, उतनी निबंधों के माध्यम से नहीं।" परिणामस्वरुप कथा साहित्य काव्य की अपेक्षा आसानी से आम आदमी से अपना संबंध स्थापित कर लेता है। काव्य में कुछ और अधिक सूक्ष्म और सौंदर्यशाली शिल्प की आवश्कता होती है जबकि कथा साहित्य में इतनी संक्षिप्तता का बंधन नही होता है। काव्य में अर्थ का अनुमान हो सकता है, पर कथा में स्पष्ट परिचित ज्ञान। छत्तीसगढ़ी साहित्य में गद्य लेखन की परम्परा काव्य परम्परा जितनी प्राचीन तो नही है, किन्तु काव्य परम्परा से पीछे भी नही है।

पं. श्याम लाल चतुर्वेदी जी का लेखन समसामयिकता समस्याओं और घटनाओं पर आधारित रहा है। "रतनपुरहिन सियानित" कहानी की रतनपुरहिन दाई उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है, जिनका मानना है "तइहा के बात ल बइहा लेगे" बहमनबोधी को पहले और आज के समाज में अंतर बताते हुए कहती हैः

"पहिली गांव भर के रहइया चाहे कुछु जात पात के रहंय एक परवा असन, सबके दुख–सुख के संगी रहय। आन के बूता ला जमो जुरके गोबरधन कस अलगा लेबेंय, अउ अब तो एक दूसर के चारी अनदेखनई झगरा–झाँसा, खीक्क होगे बेटा। मनसे तो आधू ले बाढ़ गइन फेर मन हर सांकुर होगे, जइसन चपलाई के मारे खोल गली के हाल हे"।

इसका आशय यह कि अब आपसी सद्भाव और प्रेम का भाव लोगों के मन से खत्म हो गया है। आपसी सामंजस्य और सहयोग के स्थान पर स्वार्थ के लिए एक दूसरे का गला काटना आम बात हो गई है। रतनपुरहिन सियानिन एक वृद्धा मात्र नहीं है, वह उस पूरी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है जो वर्तमान समाज में आने वाली विसंगतियों को देख कर व्यथित हैं।

"छोटे बाबू के बड़े बात" का नायक ब्राह्मण–पुत्र है, जो गांव के गौंटिया (जमींदार) का विरोध करता है। दूसरी जाति के पुरुष के साथ विवाह करने वाली नाईन की मौत के बाद गौटिया के डर से कोई गाँव वाला उसका अंतिम संस्कार करने को तैयार नहीं होता है, लेकिन माँ के कहने पर छोटे बाबू उसका अंतिम संस्कार कर जमींदार के प्रति अपना विरोध जाहिर कर देता है। सब छोटे बाबू की प्रशंसा करते हैं, तब वह कहता है "मोर नहीं मोर दाई के बड़ाई करौ मै तो ओकर कठवा के पुतरी आंव।" छोटे बाबू की माँ अत्याचार का विरोध करने वाली नारी है। वह अपने बेटे को देवी–देवताओं की कहानी सुनाती है और पाप और अन्याय का विरोध करने की प्रेरणा देती है। चतुर्वेदी जी की कहानियों मे नारी पात्रों का चित्रण विशेष महत्व के साथ हुआ है। माँ, पत्नी, बहन सभी रुपों में लेखक ने नारी–जाति के प्रति आदर भाव प्रदर्शित किया है।

"पतिबरता के पानी" में दो पतिव्रता स्त्रियों का महत्व बताया गया है। गाय द्वारा शापित हो एक ब्राहमण बारह साल के लिए गदहे के रुप में बदल जाता है। कोढ़ी पति की सेवा करने वाली गरीब धोबन जब उसके उपर ज़ल डालती है, तब वह उपने मनुष्य रुप को प्राप्त करता है। पतिव्रता ब्राहमणी धोबन के पति के उपर जल डालती है तब वह भी रोगमुक्त हो जाता है। "पतिव्रता के पुन्न म दुनू के बनौकी बनगे।"

"सतबंतिन सुकवारा" की सुकबारा पति के मरने बाद अपने देवर के साथ विवाह् करने से इनकार कर देती है, लेकिन देवरानी और गॉव वालों के ताने से त्रस्त होकर लकवाग्रस्त देवर के हाथों चूड़ी पहन लेती है। "जंगो की जोमर्दो" की जंगो गाँव वालों के विरोध के बावजूद पड़ोसी मनमतियाँ के पति की मृत्यु के बाद स्वयं उसका क्रिया–कर्म करने का निश्चय करती है। सामाजिक बहिष्कार की जो विकृत परंपरा छत्तीसगढ़ के गाँवों में आज भी "खान–पान, लेन–देन हुक्का पानी बंद" के रुप में विद्यमान है उसका जोरदार विरोध "जंगो" के माध्यम से चतुर्वेदी जी ने किया है। जंगों गाँव के बड़े–बुजुर्गों को फटकारती है "का डउकी परानी मन लहांस उठाये के साध लागत हे का हो ही, त तो बन जाही ना? जब गॉव न गॉव सोर उड़ही के फलाना गाँव मे डउकी परानी मन लहांस ल वोहिन। सबो के मेघा हर उच्च हो जाही? सहराही। (स्त्रियों को लाड उठाने का शौक नहीं है। जब दूसरे गाँवों तक यह खबर पहुँचेगी कि अमुक गाँव में स्त्रियाँ लाश उठा कर श्मशान घाट तक गई थी, तब तुम सबकी मूँछें ऊपर उठ जाएंगी, सब तुम्हारी प्रशंसा करेंगे।)

"बटोरन नही बहोरन चाही" और "भोला राम बनिस" जैसी कहानियाँ ग्राम–सुधार, न्यायप्रिय और सेवाभावी सरपंच तथा साक्षरता के महत्व को रेखांकित करती हैं, तो "मयारुक मनमतिया" में बैसाखू की कथा के माध्यम से मनमतिया गाँव के बच्चों और बहुओं को छोटे परिवार का महत्व समझती है। समूचा छत्तीसगढ़ पहले वनाच्छादित था, लेकिन पेड़ पौधों की अंधा–धुंध कटाई ने वन संपदा को समाप्त होने के कगार तक पहुँचा दिया है। चतुर्वेदी जी ने पेड़ पौधों के महत्व को रतनपुरहिन के माध्यम से व्यक्त किया है "मोला बहुत नींक लागिस, ओ दिन टहलू के हांका ल सुन के। रुख़ राई लगाये के जउन चारों मुड़ा इंदोहिल होवत हे ना ये काम हर, अपन अउ जान के, जमों के भलाई के काम है। तइहा हमर सुरता म, ये हरेली के आवत ले, वियासी होके नागर हर घोवा के धरा जाबे। ये रुखराई के आंखी मूंद के अंध–निरंध कटाई के मारे पानी बादर हर घलाय डोलगे।" "हाथी और कोलिहा के मितानी" और "एक से एक बड़े" लोक–कथा पर आधारित कहानियाँ हैं।

पं. श्यामलाल चतुर्वेदी जी की कहानियों में छत्तीसगढ़ का जीता जागता समाज है, नारी की महत्ता का गुणगान है, पर्यावरण की रक्षा के प्रति जागरुकता है और आदर्श समाज की कल्पना है। अपने समकालीन कथाकारों की अपेक्षा नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण अधिक आदर और प्रेमभाव से युक्त है। नारी सौंदर्य में उन्होंने त्याग, प्रेम और आदर्श का समावेश किया है। उनकी कहानियों में छत्तीसगढ़ का लोक जीवन समाया हुआ है।

पालेश्वर शर्मा के अनुसार "पं. श्याम लाल चतुर्वेदी की कहानियाँ किस्सागोई के नए संस्कार के साथ कहानियाँ कम चित्र अधिक हैं।"

श्यामसुंदर साहू के शब्दों में "पं. श्यामलाल चतुर्वेदी जी की कहानियों में पूरे अंचल का जीवन और परिवेश समा गया है। छत्तीसगढ़ी की लोकोक्तियों उनकी कथाओं से इस तरह फूटते हैं जैसे धीवर कन्या का चना मुरमुरा हो।

इनके अतिरिक्त देवीप्रसाद वर्मा की "भूख" (किसान और मजदूर की दयनीय दशा का चित्रण); "नागिन" (प्रेम की तड़प व प्रतिशोध) दाउ निरंजन लाल गुप्त की "सबों के दिन बहुरे" (ग्राम सुधार और सहकारिता की कहानी), हुदय सिंह चौहान की "सोहागा" और "पुतरी" (गरीब किसान कन्या की दयनीय दशा व अंधविश्वास का प्रभाव) पालेश्वर शर्मा की "सुसकत सेंदुर कुंदरत जिवरा" (ग्रामीण किसान–पत्नी की सुखी और शांत जीवन की आकांक्षा) जैसी छत्तीसगढ़ी कहानियों में जीवन के बहुरंगी चित्र विद्यमान हैं।

छत्तीसगढ़ी कथा साहित्य, विकास की दृष्टि से अभी शैशवावस्था में है। तात्विक दृष्टि से छत्तीसगढ़ी कहानी घटना–प्रधान हैं जिसमें रचनाकारों ने कथानक पर अधिक ध्यान दिया है। वर्णन प्रधान छत्तीसगढ़ी कथा साहित्य में सूक्ष्म वर्णन–चित्रण की आवश्यकता है। अधिकांशतः पात्र ग्रामीण क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले हैं, इसलिए उनमे विशेष प्रकार का भोलापन प्रतिबिंबित होता है। वातावरण गाँव की परिस्थितियों को प्रदर्शित करता है तथा चरित्र–चित्रण और संवाद योजना पर कथाकारों का ध्यान कम गया है कुछ मिला कर छत्तीसगढ़ी का कथा साहित्य नए सूरज के आगमन का संकेत" है। कथानक, पात्र, संवाद और देशकाल की अपेक्षा "उद्देश्य" पर इन रचनाकारों का ध्यान केन्द्रित रहा है। स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ी कथा साहित्य भाव, भाषा, वर्णन और शिल्प की दृष्टि से निरंतर विकासोन्मुख है। इसकी प्रमुख विशेषता "आंचलिकता के भाव को सुरक्षित रखते हुए सूक्ष्म वर्णन पद्धति की ओर बढ़ना है। पंडित श्यामलाल चतुर्वेदी ने कहानी की दृष्टि से छत्तीसगढ़ी को समृद्ध किया है।

2. ukn;&lkfgR; dh –f"V ls p rpoinh th% सन् 1905 में पंडित लोचन प्रसाद पाण्डेय रचित "कलिकाल" एवं "हिन्दी मास्टर" नामक नाटक का प्रकाशन छत्तीसगढ़ी गद्य साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है। इसके पश्चात 1920 में पंडित शुकलाल पाण्डेय रचित "गीयों" का प्रकाशन हुआ। पाण्डेय जी ने "खीरा चोट्टा" और "केकरा धरइया" की रचना इसके बाद की। इन प्रारंभिक एकांकी–नाटकों में सामाजिक समस्याओं तथा उसके निवारण के उपायों पर विचार किया गया है। इन रचनाओं का मूल स्वर आदर्शवाद से अभिप्रेरित है। सन् 1956 में रामलाल कश्यप विचरित "कृष्णार्जुन युद्ध" का प्रकाशन हुआ। पौराणिक घटना पर आधारित इस नाटक में सिद्धातों की रक्षा के लिए दो मित्रों (करण और अर्जुन) के बीच होने वाले संघर्ष की कहानी है। ज्ञातव्य है कि "कृणार्जुन" युद्ध माखनलाल चतुर्वेदी की रचना का आंचलिक संस्करण है। इन आरम्भिक घटना प्रधान नाटकों के पश्चात् प्यारे लाल गुप्त की एकांकी "दो सौत" और "चिनगारी के फुल" का पत्रिका में प्रकाशन हुआ। दोनों एकांकी, सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित हैं जिनमें तद्युगीन समाज का चित्रण किया गया है। द्वारिका प्रसाद तिवारी "विप्र" रचित "स्वर्ग में भारत की चर्चा" "मनुष–मनुष मा अंतर" और "कोनो हीरा कोनो कंकर" एकांकी भिन्न–भिन्न कथानक पर आधारित हैं।

पं. श्याम लाल चतुर्वेदी ने साहित्य की अन्य विधाओं के साथ छत्तीसगढ़ी में नाट्य लेखन को भी प्रारंम्भ किया था। एक शिक्षक होने के कारण विद्यालय की सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए उन्हें नाटक लिखना होता था। इसके अलावा सन् 1949–50 के करीब बिलासपुर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका "पराक्रम" में चतुर्वेदी जी की "चउरा के चुहुल" शीर्षक से छोटी–छोटी रचनाएँ संवादात्मक और नाटकीय ताना–बाना से रची होती थीं। अपने समय को व्यक्त करती तथा उस पर व्यंग्य करती ये रचनाएँ पाठकों के दिल पर स्पर्श करती थीं।" पं. श्यामलाल चतुर्वेदी जी ने अनेको नाटक की रचना की है, परन्तु दुर्भाग्य से आज उनके उपलब्ध नाटकों में "दिव्य स्वप्न" (1952) "चुनाव के उम्मीदवार" (1953) "मद्य–निषेध" (1985) और "मया के मोटरी" (1986) शेष हैं।

"दिव्य स्वप्न" मे पराधीन भारत की परिस्थितियों का चित्रांकन किया गया है। नाटक का नायक केशव यादव आजादी की लड़ाई का सिपाही है। स्वतंत्रता के आंदोलन में वह जेल जाता है। जेल में वह सपने में देखता है कि आजादी पाने के लिए हजारों नवयुवक अपने प्राणों की बलि चढ़ा रहे हैं, जेलों में अंग्रेजों की यातनाएँ सह रहे हैं तब वह महसूस करता है कि किसी आंदोलन की सफलता का मूल्यांकन केवल भीड़ को देख कर नही किया जा सकता है। वह कहता है "देश को बजारु भीड़ की कोई आवश्यकता नहीं अपितु अनवरत परिश्रम कर अपना अमूल्य जीवन दे कर देश के हित में काम करने वाले मुट्ठी भर जवानों की आवश्यकता है। इस नाटक में लेखक पाठकों

के समक्ष एक सवाल करते हैं क्योंकि केशव स्वप्न में आने वाले सिपाही और देश के लिए जान देने वाले क्रांतिकारियो के उत्सर्ग को त्याग का अपव्यय कहता है "माना मैने कि जनता में कुछ जागृति होती है, लेकिन मैं इसे त्याग का अपव्यय कहता हूँ"।

स्वतंत्र भारत में प्रजातंत्र के नाम पर कुछ जन प्रतिनिधि पाँच साल तक जनता पर शासन करने का प्रमाण–पत्र हासिल कर लेते हैं। आज़ादी के मात्र छः वर्षो के बाद चतुर्वेदी ने इस चुनावी व्यवस्था की सार्थकता पर सवाल उठाते हुए "चुनाब के उम्मीदवार" नाटक के द्वारा प्रश्न चिन्ह लगाते हुए कहा था कि भ्रष्ट आचरण वाले नेता भोली–भाली जनता को लालच देकर उनका वोट हासिल कर लेते हैं और चुनाव जीत कर अपने स्वयं के स्वार्थ की पूर्ति करते है। लेखक चुनाव की निरर्थकता तथा चुनाव के दौरान उम्मीदवार द्वारा वोट पाने के लिए जनता के मन में जाति–भेद की दीवार खड़ी करने के प्रयास का विरोध करता हैं। इसमें नाटक की नायिका दिव्य मूर्ति कहती है "मेरे साथ छल–छिद्र करके भी सपूत होने का दम्भ भरते हो? मेरे भोले भाले पुत्रों को झुठी बातों में फुसला कर अपना घर भरने वाले............. सेवा का जामा पहन सेवा विमुखता का सक्रिय सबक सिखा कर वर्गभेद निर्माण करने वाले..........। इस नाटक का उद्धेश्य छोकतंत्र में चुनाव–व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार को जड़ सहित उखाड़ फेकने की प्रेरणा देना है।

"मद्य–निषेध" नाटक में चतुर्वेदी जी का उद्देश्य सुधारात्मक है। किस प्रकार शराब पीने वाला व्यक्ति पूरे समाज को प्रदूषित करता है तथा उसका परिवार के बिखर जाता है, इसे बताने का प्रयास लेखक ने किया है। नाटक का प्रमुख पात्र नाटक के अन्त में शराब पीना छोड़ देता है। इस नाटक को मध्य प्रदेश पंचायत एवं समाज सेवा विभाग द्वारा पुरस्कृत किया गया है। "मद्य–निषेध" सामाजिक संदेश देने वाला नाटक है। गाँव के मालगुजार का लड़का जंडेल सिंह शराबी हो जाता है। अंततः जब वह सुधर जाता है तो अपनी गलतियों से सबक सीखते हुए नशाबंदी का प्रचार करने का प्रण लेता है। इस प्रचारात्मक नाटक में लेखक इस की चिंता इस पर विशेष रूप से दिखायी देती है कि गाँव का गवईपन अब धीरे–धीरे समाप्त होता जा रहा है।

गाँवों की मूल विशेषता वहाँ के रहने वालों का अपनत्व का भाव है, जिसकी झलक नाटक में दिखाई देती है "जइसे एक जगह सब झन रहिथन, एक दुसर के सुख–दुख मा सकलाथन, जइसे बड़ोरा हर आथे तब ओकर झकोरा हर जमो ला झेले बर पड़थे। पानी हर उतारु कोती तो ढुलही.... देखा सीखी म ये बीमारी हर ख़दर के आगी कस एक छिन म भंग ला धरथे, बगर जाही तब हमर तुहर का बाचही? हमर गाँव के जउन असगई–पसगई में सोर हे के ओ गाँव म सुमत हे। जमो एक माई के पिला कस रहिथे। गाँव के घाट घरउधा के खेती–खार के गरुआ बैला सबके चौबंधा बंधे हे, तउन रहे पाही का'?

इसी एकता के सूत्र को लेखक सदैव सुरक्षित देखना चाहता हैं। इसी प्रेम भाव को सुरक्षित देखने की ललक "मया के मोटरी" नाटक में है। पं. श्यामलाल चतुर्वेदी जी ने गाँव को मया के मोटरी अर्थात् प्रेम की गठरी कहा है। छत्तीसगढ़ के गाँवो में निवास करने वाले लोग जाति, धर्म, अमीर गरीब के भेदभाव को भूलकर किसी न किसी रिश्ते की डोर से जुड़े बंधे होते है। गाँव में लोग ऊँच–नीच अथवा नौकर–मालिक के रिश्तों को नहीं जानते, वे तो एक परिवार के समान मिलकर रहते हैं। जिसके संवादः

"बलौदाहीन – जबड़ टेंकहा हस रे। गाड़ा पीड़ा के अलहन हर नई जाने जाय। चला तोर कका ला चेता देंहव। सोझ–साद रहिबे, तुलमुल तैथ्या झन करबे।

समलिया – कका कहां है ? ओ लग तो हमर कमिया हर हावंय।

बलौदाहिन – कमिया नई कहँय तोर कका ये बेटा।

समलिया – ओहर हमर कइसे कका होंही? ओहर तो घंसिया पारा के आय। घंसिया मेहत्तर हर हमर कका कइसे होही?

बलौदहिन – चटर–चटर झन मार। ओदे तोर ददा हर आवत है। सुन पाही तब तान के चटकन दे ही। कमिया झन कहिबे कका कहिके गोठियाबे।

सारा गाँव अपनेपन की रस में डूबा हुआ है। बलौदहिन अपने पति चैतु से बात कर रही है। विषय है बेटी की शादी की तैयारियां। गाँव के साहुकार झाडूसाव उधर से निकलते है। पति–पत्नी की बातचीत का विषय जान कर स्वयं कहते हैं– "चैतु देख, पहुना पाही के सान–बड़ाई म कुछु कमती नई होना चाही। इंहा बड़े दरी; करैहा, डराम ल ले जा। चेत राखे रहिबे, कुछ के कमती झन होवय। थोर को हिनमान हो ही तब हमर नाक ह पहिली जाही, पीछू चैतु के।" झाडू साव साहूकार हैं, चैतु निम्नजाति का मजदूर है, लेकिन साव उसके घर में होनेवाले विवाह को लेकर चिंतित हैं। गॉव का माहौल अब बदल रहा है और धीरे धीरे रिश्ते–नाते भी टूटते बिखरते जा रहे हैं। लेखक इस बिखराव के बाद भी आशावान है कि सब कुछ धीरे धीरे ठीक हो जाएगा। इस संदर्भ में नंदकिशोर तिवारी जी लिखते हैं "और यही है "मया के मोटरी" में अपने गाँव और समाज का आख्यान और छिपी एक चिन्ता। चिन्ता यह कि बदलते परिवेश के दबाव में यह सब समाप्त हो रहा है। यही चिंता लेखक को समाज में महत्वपूर्ण बनाती है, क्योंकि वह अपनी समाजिक चिंता को जिसमें सामाजिक शुभ की कामना होती है, सभी के लिए सोच का विषय बनाता है।

छत्तीसगढ़ी एकांकी नाटकों का नाट्य तत्वों की द्वष्टि से विवेचन उचित प्रतीत नहीं होता है क्योकि छत्तीसगढ़ी नाटक एकांकी की रचना अधिकाशतः जनसामान्य तक किसी संदेह को पहुँचाने के उद्देश्य से किया गया था। आम आदमी के चरित्र को उठा कर बिना किसी लाग लपेट के इसे रचनाओं में उतार दिया गया है तथा जन सामान्य की भाषा का प्रयोग करते हुए जीवन के छोटे–छोटे सुख–दुख को प्रस्तुत किया गया है। इन रचनाओं का मूल्यांकन करते हुए यह बराबर ध्यान रखना चाहिए कि इनके रचयिता जनजीवन में प्रचलित भाषा को साहित्यक भाषा का रुप देने का प्रयास कर रहे हैं. तथा इनकी रचनाएँ अभी विकास की शैशवावस्था में हैं तथा शिशु, जिस प्रकार अपने आसपास से नित नवीन अनुभव अर्जित करता है उसी प्रकार इन रचनाओं के सर्जन से छत्तीसगढ़ी साहित्यकार छत्तीसगढ़ी साहित्यिक भाषा रुपी शिशु को विभिन्न साहित्यिक विधा रुपी नये अनुभवों से सुसंपन्न कर रहे हैं। परंतु छत्तीसगढ़ी नाटकों में एक बात विशेष ध्यान देने की है कि सभी नाटककारों ने अपने समय की सामाजिक समस्या पर विशेष रुप से ध्यान केंद्रित किया है। समस्या का संबंध भी ग्राम्य परिवेश से अधिक रहा है। पं. श्यामलाल चतुर्वेदी जी के छत्तीसगढ़ी नाटकों का महत्व इसलिए बढ़ जाता है कि उनके चारों नाटकों में कथा का चयन अलग–अलग विषयों को लेकर किया गया है परंतु यह भी सत्य है कि पं. श्यामलाल चतुर्वेदी जी एवं उनके समकालीन साहित्यकारों ने छत्तीसगढ़ की व्यथा कथा को निकट से देखा है और स्वयं अनुभव किया है, इसीलिए इनकी रचनाओं में छत्तीसगढ़ी लोकजीवन समाहित हो गया है। इनके नाटकों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता है सहजता और भाव प्रवणता। पं. श्यामलाल चतुर्वेदी जी के नाटकों में उन समस्याओं पर अधिक प्रकाश डाला गया है, जिनसे हमारा समाज पतन की ओर अग्रसित हो रहा है। इनमें छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य संस्कार और हिंदी नाटकों के मंचन का प्रभाव एक साथ दिखाई देते हैं। पं. श्यामलाल चतुर्वेदी ने लोक–जीवन को अपने नाटकों के माध्यम से अनावश्यक सजावटीपन से बचा कर प्रस्तुत किया है, जो उनकी बहुत बड़ी सफलता माना जाना चाहिए। पात्र एवं संवाद, सजीव, सरल और स्वभाविक, कथानक–जीवन से संबंधित समस्या, देशकाल–रचनाकारों का वर्तमान, उद्देश्य समाज सुधार की भावना तथा संभावनाओं की दृष्टि से मंचाभिनय पर जोर यही पं. श्यामलाल चतुर्वेदीजी के नाट्य साहित्य का मूल आधार है।

3. x| dh vU; foèkkvk dh –f"V I; prqoinh th% किसी भी भाषा साहित्य का गद्य विद्या का निबंध साहित्य उस भाषा की दशा का सच्चा परिचायक होता है। निबंधों में चिंतन की गहराई और विषय का पारदर्शी विवेचन होता है। निबंध सुव्यवस्थित विचारों की सुसंबद्ध श्रृंखला होती है। विषय का चयन और प्रस्तुतिकरण की दृष्टि से निबंध रचनाकार को अधिक विस्तृत क्षेत्र प्रदान करता हैं तथा भाषायी गठन की सुसंबद्धता को प्रदर्शित करते हैं। निबंधों में व्यवस्थित चिंतन को ज्यादा महत्व दिया जाता है, तथा निबंध का क्षेत्र भी कविता की तुलना में विस्तृत होता है, इसीलिए निबंधो के अंतर्गत अन्य गद्य विधाएं भी किसी न किसी रुप में समाहित होती हैं।

डॉ. राकेश ने निबंधों के विषय में लिखा है "निबंध वह गद्य रचना है, जिसमें किसी विषय पर क्रमबद्ध, संयम भाव, किसी भाषा में यत्नपूर्वक सीमित आकार के भीतर विशिष्ट शैली में विचार व्यक्त किए जाते है।"

पंडित श्यामलाल चतुर्वेदी जी का गद्य लेखन का क्षेत्र विस्तृत है। एक पत्रकार होने के कारण उन्हें विशेष अवसरों पर लेख, टिप्पणी आदि लिखने पडते थे। उनके निबंध सरस, स्फूर्तिपूर्वक और प्रेरणादायक सहज मन के उद्गार हैं। पैनापन और विश्लेषण की प्रवृत्ति उनके लेखन में पाई जाती है। उनके निबंधों के लिए लेख शब्द का प्रयोग अधिक उपयुक्त लगता है। लोक साहित्य पर चतुर्वेदी जी के प्रकाशित अप्रकाशित पच्चीस से तीस लेख उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त "छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य" के नाम से पुस्तकाकार पाण्डुलिपि है। आकाशवाणी रायपुर से प्रसारित उनके लगभग पचास लेख (निबंध) उपलब्ध हैं।

लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति विषयक उनके निबंध लोक जीवन और संस्कृति के संरक्षण के प्रश्नों पर केंद्रित हैं, जो संकीर्ण न होकर व्यापक दृष्टिकोण वाले है। पं. श्यामलाल चतुर्वेदी जी छत्तीसगढ़ को पूरे भारतीय परिवेश में देखने की चेष्टा करते हैं। भारत की विविधता में एकता के दर्शन, कहीं के भी अबूझे स्वरों में मार्मिक अनजाने होते हुए भी अपनत्व के आकर्षण, ये सब लोक संगीत के प्रिय प्रसाद हैं। इस प्रसाद से आत्मतुष्ट छत्तीसगढ़ भी संजीवनी थाली से अपनी पहिचान बनाने का सामर्थ्य संजोए, विस्तीर्ण अंचल में कोकिल कंठ स्वरों में मादर की मदिर निनादों, मस्ती में होने वाले झंकारों में गुंजित रहता है। लोक साहित्य को पं. श्यामलाल चतुर्वेदी जी मानव समाज के विकास की क्रमिक कहानी प्रस्तुत करने वाला मानते हैं। लोक साहित्य का विषय अत्यंत व्यापक है। इसे लोक गीत, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोकगाथा एवं लोकउक्ति के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। "छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य" में पं. श्यामलाल चतुर्वेदी जी ने उक्त समस्त विधाओं का विवेचन करते हुए इनका सुंदर परिचयात्मक रुप प्रस्तुत किया है। आपने छत्तीसगढ़ में प्रचलित ददरिया, करमा, गउरा, सुआ, डंडा, बॉस, भोजली गीत आदि लोकगीतों को इनकी सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ स्पष्ट किया है। छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का परिचय, "छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य पर एक दृष्टि", "हमारी एकात्मकता लोकगीतों में", "छत्तीसगढ़ का छोक साहित्य", "जियत जागत रहिबो भोजली होड़ जाही भेटें" आदि निबंधों में समग्रता के साथ छत्तीसगढ़ी छोक साहित्य की विविध विधाओं पर विचार किया गया है। "जोग लिखी" इतिहास का बोध कराने वाला वैज्ञानिक लेख है जिसमें पं. श्यामलाल चतुर्वेदी जी ने पुराण, इतिहास और घाघ–भडुरा के कहावतों तक का सूक्ष्म विवेचन किया है।

"मध्यप्रदेश के लोक साहित्य में जातीय चेतना" में आपने मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों मे प्रचल्तित संस्कार गीतों एवं अन्य लोकगीतों का तुलनात्मक विवेचन किया है। छत्तीसगढ़ी एवं बुंदेली भोजली गीतों के मुख्य अंतर को स्पष्ट करते हुए आपने लिखा है "छत्तीसगढ़ी भोजली गीत में जहाँ नारी की करुणा, दया, भक्तिभाव प्रमुख है, वहीं बुंदेली भोजली गीत में शौर्य, वीर, रौद्र भाव परिलक्षित होते हैं। छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य एवं जनजीवन का एक एक हिस्सा चतुर्वेदी जी के इन निबंधों में समाया हुआ है। पंडित श्यामलाल चतुर्वेदी के इतिहास एवं पुरातत्व विषयक निबंध छत्तीसगढ़ का परिचय देने वाले हैं। "छत्तीसगढ़ का ऐतिहासिक स्थलः रतनपुर" इतिहास विषयक उनका महत्वपूर्ण लेख है। इसका आधार किवंदंतियों एबं बाबू रेबाराम लिखित पद्यात्मक इतिहास है। पुराणकथा को यहाँ की लोकसंस्कृति को आधार मानते हुए उनकी टिप्पणी अत्यंत समीचीन है "छत्तीसगढ़ की सर्वदर्शी संस्कृति, उसका आतिथ्य सत्कार है। कौन नहीं जानता कि यहाँ के निवासी अपने परिचित–अपरिचित अतिथियों का सत्कार "अतिथि देवो भव" की भावना से करते आये और आज भी करते हैं। उनकी श्रद्धा में अभाव का दुष्परिणाम निष्प्रभावी होता है। लगता है "मयूरध्वज की परंपरा जन–जीवन से जुड़ गई है? "पाली का महादेव मंदिर" इनका विशुद्ध पुरातात्विक निबंध है। इसमें उन्होने बहिर्साक्ष्य और अंतर्साक्ष्य का सूक्ष्म निरीक्षण करके जो तथ्य प्रस्तुत किये हैं, उनका स्थायी महत्व है। ऐसे पुरातास्विक महत्व के स्थानों की उपेक्षा से दुःखी होकर वे कहते हैं–"अतीत–गौरव के गवाह प्राचीन थातियों की असुरक्षा से इस विचार को बल मिलता है कि क्या हम अस्मिता की रक्षा–उपायों के प्रति बेसुध होकर विदेशियों की उधारी–बुद्धि पर आश्रित रहना अभी भी अभीष्ट समझ रहे हैं? जिसे हम बना नहीं सकते बिगाड़ने से तो बचावें। पंडित श्यामलाल चतुर्वेदी के लोक साहित्य एवं ऐतिहासिक पुरातात्विक निबंधो के विषय में डॉ. बलदेव ने लिखा है– "पंडित श्यामलाल चतुर्वेदी छत्तीसगढ़ के लोक जीवन की रंगा–रंग झाँकियों के साथ यहाँ की दयनीय दशा का वर्णन करते हैं तो दूसरी ओर यहाँ के गौरबपूर्ण इतिहास और संस्कृति का वर्णन अपने निबंधो में करते हैं।"

भारतीय संस्कृति पर पड़ने बाले पाश्चात्य प्रभावों से चतुर्वेदी जी व्यथित दिखाई देते हैं। संस्कृति अंतर तथा

बाहय जीवन की अभिव्यक्ति है। बाहरी प्रभावों से उसका रुप विकृत होता है। फैशन की दौड़ मे लोगों की भीड़ शामिल हो गई। अंग्रेजी शिक्षा ने इस बुराई को और बढ़ावा दिया है। "लुप्त होती लोक संस्कृति और लोक परंपरा" निबंध में चतुर्वेदी जी ने राष्ट्रीय अस्मिता को सुरक्षित रखने की दृष्टि से इस प्रवृत्ति को गलत ठहराते हुए लिखा है–"अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीय जन–जीवन को बहुत कुछ प्रदूषित किया है। संयुक्त परिवार में रहकर दुख–सुख में सहभागी जीवन बिताने की पद्धति का परित्याग करने और उसके बजाय व्यक्तिगत सुख सुविधाभोगी सोच को बढ़ावा मिला है। परिधान के परिवर्तन ने करोड़ो ग्राम वासियों से दुराव पैदा किया। किसी भी वर्ग के बड़ो को बड़ा मानने का प्रचलन कमजोर हो रहा है। अपनी बोली, अपने रहन–सहन, अपने खान–पान के ढंग हीनता के बोधक समझे जाने लगे है। इस तरह मन–मस्तिप्क में पाश्चात्य आचार का जोर जमता जा रहा है। स्वतंत्र देश में राष्ट्रीय अस्मिता के भाव को भुलाने या भुलवाने के लिए जो समझ–सुलभ उपाय हो रहे है वह अपने हाथों अपनी हत्या के समान है। ऐसा नहीं है कि पं. श्यामलाल चतुर्वेदी जी मात्र लोक साहित्य के अध्येता थे पर इतना अवश्य है कि चिंतनपरक एवं विचारात्मक निबंध की ओर उनका ध्यान कम गया है। इसके बावजूद उन्होंने यंत्र–तंत्र अपने निबंधो में अन्य विषयों पर विचार प्रस्तुत किए है, वनों की अंधा–धुंध कटाई का विरोध करते हुए "क्या पाया" में लिखते हैं "सघन वन विरले हुए, विरले वन मैदान हुए, वन–विनाश के फलस्वरुप नदी–नालों के अजस्र प्रवाह थम गए। वर्षा की सुनिश्चितता अनिश्चितता में बदल गयी। आजादी के बाद वनों का विनाश हुआ और वनो की रक्षा के लिए रखे गए भांति–भांति के रक्षकों और संरक्षको पर वेतन भत्ते, उनकी सुविधाओं–सेमीनारों, विदेश भ्रमणों पर व्यय किए गए हैं "बासंती बयार के बीच", "होली का हुड़दंग", "होली आई रे" आदि निबंधों में चतुर्वेदी जी ने ऋतुराज के आगमन और होली की मस्ती का सरस वर्णन किया है। "पकड़ का प्रताप" में चिंतक चतुर्वेदी जी व्यंगात्मक हो गए हैं। "पकड़" अर्थात् "पहुँच" को उन्होंने सफलता का मूल मंत्र कहा है "पकड़ पक्की हो, पाठशाला पधारने की जरुरत नहीं। किसी पकड़ पुरुष से अपना "अटेचमेंट" हो तो मनचाही जगह में "अटेच" हो जाइए। वोट पकड़ने के प्रयास में बिना परीक्षा लिए पास करने का प्रोग्राम प्रत्यक्ष प्रमाण है। यह बात और है कि बिना परीक्षा दिए पास हुए बच्चे बाद में बिना पकड़ के भले फेल हो जाय, वोट पकड़ने वाले को क्या? आगे की पकड़ में अग्रसर आप तो उसे पकड़ पाने से रहे। आकाशवाणी से प्रसारित "न जाने कैसा तो लगता है कुछ नवयुवको को देखकर" शीर्षक रचना में आज के युवाओं की मानसिकता पर तीव्र चोट की गई है। गुमराह होते युवाओं को देखकर बुजुर्गों का दुखी होना अकारण नहीं है। आजादी के बाद और पूर्व की युवा मानसिकता में आए बदलाव को देखकर पं. श्यामलाल चतुर्वेदी जी को कहना पड़ा "समाजगत विकृतियों का प्रतिबिंब ही युवकों में दिख रहा है, जिसे देख कर बेजार होने से क्या होगा? स्वयं कुछ करके सिखाने की गॉधी जी की परंपरा अब नहीं दिखाई पड़ती है? आजादी के बाद हम दिनों–दिन देख रहे हैं कि ऐसे लोगों के हाथो उपदेश का चोंगा आ गया है जिनके चरित्र में ही दाग हैं। जब आचरण को पराया काम समझ कर नेता ही घुट्टी पिलायेंगे, तो दूसरों पर उसका असर वैसा क्यों नहीं होगा।

पंडित श्याम लाल चतुर्वेदी ने निबंध विधा को निश्चित रुप से समृद्ध करने एवं विकास की ओर ले जाने का महत्वपूर्ण कार्य किया हैं परंतु उनके निबंधो में "लोकसाहित्य" का विस्तार अधिक मिलता हैं। पंडित श्यामलाल चतुर्वेदी ने गद्य की विभिन्न विधाओं को लोकप्रिय बनाने का कार्य किया है। छत्तीसगढ़ी गद्य साहित्य, काव्य की अपेक्षा उपेक्षित और अल्प चर्चित होने का कारण गद्य में परिनिष्ठित छत्तीसगढ़ी प्रयोग का नहीं किसर जाना है। इसके अतिरिक्त "गद्य सुनने में भले अटपटा न लगता हो, पढ़ने मे अवश्य अटपटा लगता है। इसका कारण पठन–पाठन संस्कार का अभाव है।" इसे दूर करने के लिए चतुर्वेदीजी की भूमिका महत्वपूर्ण है। अपनी रचनाओं (कहानी, निबंध, नाटक आदि) में छत्तीसगढ़ी के परिनिष्ठित रुप का प्रयोग करने के साथ हिन्दी का भी सहारा लिया है। गद्य की लगभग समस्त विधाओं का विकास चतुर्वेदी जी के समय में हुआ। यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। पं. श्यामलाल चतुर्वेदीजी ने जिस प्रकार अपने गद्य के माध्यम से जनरुचि उत्पन्न करने योग्य समर्थ सहित्य की रचना की है, उससे छत्तीसगढ़ी साहित्य को विकास की नई दिशा प्राप्त हुई है।

jke&cuokl

पण्डित श्यामलाल चतुर्वेदी रचित खण्ड काव्य "राम बनवास" का छत्तीसगढ़ी प्रबन्ध काव्य परम्परा में महत्वपूर्ण

स्थान है। संवाद–योजना की इसकी विशिष्टता, इसे अन्य छत्तीसगढ़ी प्रबंध काव्यों से अलग करती है। डॉ. विनय कुमार पाठक के अनुसार "संवादों के माध्यम से भावाभिव्यक्ति तथा कथात्मक संगुम्फन यद्यपि हिंदी काव्य के लिए नवीन प्रवृत्ति है तथापि इसके बीज "रामबनवास" में मिलते हैं। संवाद संगुम्फित "रामबनवास" पारम्परिक प्रबंध काव्यों की विशिष्टताओं को समेटे हुए आंचलिकता के कारण उल्लेखनीय है। करमा लोक छंद में निबद्ध एवं बहत्तर पदों में आबद्ध यह कृति राम–केंबट संवाद के मार्मिक प्रसंगों के साथ बनवास काल की प्रमुख घटनाओं को संक्षिप्त ढंग से संजोती है तथा छत्तीसगढ़ संस्कृति और पर्यावरण को उजागर करती है। "करमा तार मा" कहकर कवि ने लोक छंद की स्वीकारोक्ति के साथ मंगलचरण के रुप में "सरस्वती के सुमरना" से कथा का आरंभ किया हैः

"माघ दूसर पाख पंचमी दिन ये तोर पूजा के
पांव परव मै डंडा सरन भीख दे दे विद्या के
तोर मोला आसरा हे तोरेच हे भरोसा।
किरपा तोर बिन ऐती होही तीनेच परोसा
में तो कुछू नइ जानंब
लिखत हाँ बनवास राम के तोरेच पुत्र मानंव।।

चतुर्वेदी जी ने भक्त कवियों के समान मंगलाचरण से कथारंभ किया है। कवि के यह अनुभव किया होगा कि सरस्वती कण्ठ में विराजमान है इसीलिए "राम कथा" को छंदबद्ध करने की पुण्य प्रेरणा उन्हें मिली है और उसी विद्या और ज्ञान की देवी की प्रेरणा से वे इसके लेखन में प्रवृत्त हो रहे हैं।

राम केंवट से आग्रह करते हैं कि वह उन्हें लक्ष्मण और सीता सहित गंगा पार पहुंचा दें किन्तु केंवट कुछ बोल नहीं पाता और एकटक अपने भगवान को निहारते खड़ा रहता है। उसकी दशा देखकर राम उससे कहते हैं।

"असमंजस होगे का?
कोन बात के अलकर तोला कहि डारना गा
अड़बड़ दिन ले खोजिस तेला अपने घर माँ पाइस।
भुखहा भिखमंगा ला जइसे ले के खीर खबाइस
गुनय बेरा करिहोंगा।
मिलकी मारे बिना एकटक्कू देखय गा।।

छत्तीसगढ़ जादू–टोना एवं तंत्र–मंत्र का गढ़ रहा है। केंवट के अनुसार राम "मन्तरहा" अर्थात् तांत्रिक हैं, जिन्होंने पत्थर को नारी बना दिया, इसलिए वह इन्कार करता हैः

"तोला नइ नहकावौं ददा, हाबस तैं मन्तरहा।
पत्थर छोकरी करे डोंगा ला कर देबे बनबरहा।।

इस बात पर लक्ष्मण उत्तेजित हो उठते हैं, परन्तु केंवट अपनी जिद पर अड़ा रहता है, यह कहता है कि "चाहो तो मार लो लेकिन नदी पार तभी कराउंगा जब अपने पैरों को धोने देगें"। राम हँसकर स्वीकृति देते हैं और उसके बाद केंवट का परिवार और ग्रामवासी प्रभुचरणों की सेवा में जुट जाते हैंः

"माई पिला कका बड़ा के, जात सगा सब आइन
मछरी मारत रहेंय तेला, देही दे बलाइन
माहकिस बिस्सराइन गा।
सौ सइकरा मनखे छिन माँ खमखमाइन गा
एकक चुरबा पियिन, अपन भाग ला संहराइन।
सात पीढी ला एती–ओती के, सरग माँ पठवाइन

भरत मिलाप एवं अनसुइया उद्धार के पश्चात् राम ने वनवास काल में साधुओं पर अत्याचार को महसूस किया। उन्होंने ऋषि–मुनियों से मंत्र व आशीर्वाद की कामना की। इस पर ऋषियों के उत्तर–उद्‌गार केशव के संवाद–कोशल के समकक्ष पहुंचता है:

"देवा वो मंत्र लग जेमा दानो मरत हैं।
मुनी मुसकियाइन कहिन मिलिक के मारत मा।
आन तान दुनिया हो जाये, आंखी उघारत मा
तुंहला का मैं कहों राम।
काल के तूं काल तुंहला का मैं कहौं राम

सूर्पणखा प्रसंग, खरदूषण–वध और सीता हरण के पश्चात् राम का विलाप सामान्य छत्तीसगढ़ी मनुज का बिलाप लगता है:

"पेड़ चिराई चुरगुन पूछँय, सीता जी कहां गें।
जोडों नरियर दे हों मैं।
बतावा दुलहा देव कोन लेंग मेंट लें हौ मैं।।

सबरी प्रसंग में लक्षमण सबरी के जूठे बेर चुपचाप फेंक देते है। इसे देख राम उन्हें समझाते हैं:

"ओहो भगत के अपमान।
ओही हर अलकरहा मा तोर बचाही प्रान"

राम बन–काल के प्रमुख अंशों का मार्मिक वर्णन इस लघु खंड–काव्य में है।

ijk Hkj ykÃ

"इस कृति को छत्तीसगढ़ी गांव और किसान की जिंदगी की अन्तर्भावनाओं का अकृत्रिम स्वर कहा जा सकता है, जिसमें राष्ट्रीय चेतना के साथ ही धरती के प्रति आत्मीय और संघर्षो के बावजूद कर्म और परम्परा के प्रति निष्ठा के भाव मुखर हैं।"

"आइस जब बादर करिया "धरती रानी हरियागे पर्रा भर लाई छरियागे"

बादर झनि आ, झनिआ कुहुक के कल्लई और उंकर अगोरा भा जैसी कविताएं प्राकृतिक सौंदर्य तथा उससे प्रभावित किसान–जीवन को निकट से जानने–समझने के लिए. श्रेष्ठ उदाहरण कही जा सकती हैं। बरसात के बादलों का आगमन और इसके साथ किसान का सुख इन पंक्तियों में झलकता है:

"का किसान के सुख कहा,
बेटवा बिहाब हो जइसे

और वह जैसे घरती रानी के विवाह की तैयारियों मे जुट जाता है:

"दौड़ धूप सरजाम सकेलंय,
काल लगिन होय अइसे।
नॉगर बिजहा बइलाजोंत,
नहना सुधर तुतारी।
कॉवर टुकना जोर करंय,
धरती बिहाव के त्यारी।

दूसरी ओर अतित्रृष्टि से दुखी किसान साल भर की कमाई बरबाद होने की आशंका से भयभीत हो "वर्षा ऋतु" के दूसरे पक्ष को भी प्रदर्शित कर रहा है:

"चार महीना के मेहनत हर, छिन मा चरपट होही।

हमला अजम कसम से हावै, तैं नोहस निरमोही
अतेक बडें पानी के राजा, आइस बिना बलाये।
सुनहीं तउने छि ! छि ! करही, येमा मंजा का आये

"पर्रा भर लाई छरियागें" में शरद ऋतु की चांदनी का दृश्य बिम्ब चतुर्वेदी जी की कवि कल्पना–शक्ति का प्रदर्शन है। साफ–सुथरी गलियों, स्वच्छ शुभ्र बादल और तारों का समूह मानों प्रकृति की सारी सुंदरता को मानव के सम्मुख खोल रहे हैं:

"पूराबोहागे, चिखला कॉदों गइस संथाय नेंदागे।
काबर बादर के बग्गी हर धोड़बा सहित बँधागे
फरी अँजोरी चूक–चूक ले, बगरे अनलेख तराई।
पर्राभर लाई छरियाये हे, गने न जाय सिराई।।

संयोग–वियोग के भाव सभी को छूते है राग–विराग, प्रेम और पीड़ा से कोई मुक्त नहीं है। कवि ने किसान–किसानिन के इस पक्ष को भी मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित किया है। वियोगिनी नायिका, नायक द्वारा दी गई आगमन–अवधि का एक–एक दिन, एक–एक क्षण मुश्किल से गुजार रही है। उस पर प्रकृति का सौंदर्य उसकी पीड़ा को और बढ़ा देते हैं। घनांनद की नायिका की तरह छत्तीसगढ की यह किसानिन कोयल पर अपना आक्रोश व्यक्त करने से नहीं चूकती:

"कोइली कल्लूठी कइसन कुहकय, कुडकाबै मोला।
ये बिन गत के मन संगी, का पांय जरो के चोला"

दिन–रात मेहनत करने वाले किसान–मजदूर आज भी भरपेट रोटी के लिए तरसते हैं। चारों तरफ शोषकों की भीड़ और बीच में संघर्ष करता श्रमिक–वर्ग जब गरीब किसान सब तरफ से निराश हो जाता है तब भगवान को याद कर अपनी दुर्दशा के लिए उन्हें दोषी करार देते हुए कहता हैः

"सुनले–सुनले भगवान देखले, मेहनत के बलदा उपास।
उलटा अलाल बतकट्टा के, थैली म रहिथे सौ पचास
भगवान सहीं तैं हावस तब, फुटहा आँखी म तहूँ देख।
ये हमर करम के लिखबइया, अइसने भाग के लिखे लेख।

"बेटी के बिदा" कविता सामान्य जन–मन की कथा है। जैसे–जैसे बेटी की विदाई का दिन नजदीक आ रहा है, माता–पिता सशांकित हो रहे है। बेटी परधन है, यह सभी जानते है बेटी एक दिन ससुराल जाती ही है, यह भी ज्ञात है, परन्तु मन को कौन समझा सकता है? वह माने तब ना

"ओइसे उन ठउका कहिथें, कोन हर ओतका नइ जानय।
गुनथी समझाथौं मन छा, फेर चिटकौ कन नइ मानय।।

माता तो समधी और दामाद को इस दुख के लिए दोषी करार देने के साथ–साथ सृष्टि के रचयिता ब्रम्हाजी को भी कोसती है कि उनकी बेटी नहीं हैं, वे इस दुख को क्या जानेंगे:

"का एको स्रोग नइ करहीं, मोर समधी सजन दर्मांदे।
का मोर कुगत ला देख तभो, ले जाहीं डोला फाँद
ब्रम्हा के बेटी नइये, का बिना के दुख नई जानय
बेटी झन जाये देतिस, झन कहे कोनो के मानय।
भोलवा भोलाराम बनिस

चतुर्वेदी जी की नौ कहानियाँ इस कृति में संकलित है। संकलित कहानियों में ग्रामीण परिवेश का रोचक एवं

सहज चित्रण है। इस में अंचल के रीति–रिवाज, तीज–त्यौहार और जीवन शैली का सजीव चित्रण हुआ है। इस संग्रह की कहानियों में ग्रामीण परिवेश सजीव और साकार हो उठा है। .मयारुक मनमतिया कहानी बड़े परिवार की समस्याओं को उजागर करती है और अंत में परिवार नियोजन का संदेश देती है। ”केच्चो पेच्चो लड़का हो आहा तब पिछु पछताहा। आजकल तो कमती लड़का बच्चा रहय तेकर कई किसम के उजोग निकरे है। तउन ला जान समझ ला। ”बटोरन नही, बहोरन चाही” और ”भोलवा भोला राम बनिस” कहानियों में ग्रामसुधार की भावना उजागर हुई है ”पतिबरता के पानी” और ”छोटे बाबु के बड़े बात” कहानी में रुढ़ियों का विरोध करने की भंगिमा दिखाई देती है। इस संग्रह में वातावरण तथा परिवेश पर लेखक की सूक्ष्म दृष्टि केंद्रित हुई है। ग्रामीण परिवेश और उस परिवेश में रहने वाले किसम–किसम के लोगों का सुन्दर चित्रण किया गया है। इस संग्रह की कहानियों पर टिप्पणी करते हुए डॉ. पालेश्वर प्रसाद शर्मा ने लिखा है– ”ये आंचलिक कथाएँ एक स्तर पर कहानियों हैं, किस्सा गोई के नये संस्कार के साथ, दूसरे स्तर पर ये कहानियाँ कम, चित्र अधिक हैं और तीसरे स्तर पर उग्र मधुर स्वरो में बंधे जीवन राग। इसमे कथा की परिपाटी है रोचकता की दृुष्टि से, किन्तु कहानी की सी एकता और अन्विति नही, अनुभवों का बिखराव और प्रभाव बिम्बों की एक कतार जिसमें कहानी के सारे कला तत्व भी है, इसमें मिलती है। इसमे लोकगीत, लोककथा के स्वर तथा अकृत्रिम भाषा के माध्यम से ध्वनि चित्र मिलते हैं। चतुर्वेदी जी ने ग्रामीण जीवन की समस्याओं और दुख–सुखों को भोक्ता की हैसियत से इन कहानियो में जीवन्त बना दिया है।

सुकवि, कर्मवीर, नवभारत, युगधर्म, आदि पत्र पत्रिकाओं में चतुर्वेदी जी की रचनाएँ समय–समय पर प्रकाशित हुई हैं। नदी की नेह, ”खोली मे देवता” ”रानीमाता“ (कहानी) ”न जाने तो कैसा लगता है कुछ नवयुवकों को देख कर,“ पकड़ का प्रताप, होली का हुड़दंग (व्यंग्य), ”छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का परिचय”, ”छोकनाटक परंम्परा ”रहंस”, ”सामान्य जन एवं सार्थकता लोकनाटयों की”, ”मध्य प्रदेश के छोकसाहित्य में जातीय चेतना” (लोकसाहित्य विषयक लेख) ”परिवार नियोजन”, ”बिदा के बेरा” (एकांकी), ”छत्तीसगढ़ी गीत मरजत बादर”, ”नवयुवकों से” (कविता) आदि मिली जुली रचनाओं में आंचलिकता का पुट दिखाई देता है, साथ ही समाज के प्रति दायित्वबोध से भरे रचनाकार की पीड़ा भी झलकती है।

NÙkhlx<h ykd lkfgR;

चतुर्वेदी जी ने इस अप्रकाशित कृति में छत्तीसगढ़ की भौगोलिक स्थिति का संक्षिप्त परिचय देते हुए लोकसाहित्य का परिचय एवं महत्व बताया है। उन्होनें स्वीकार किया है कि ”छत्तीसगढ़ी का लोकसाहित्य अत्यंत समृद्ध है। लोक साहित्य को, निबंध होने के कारण किसी एक सीमा में बांधा नही जा सकता। लोकसाहित्य के लिखित स्वरुप को परिर्वतन शील परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए। लोक साहित्य के लिखित रुप को ऐसा ही है, न मानकर, कैसा भी, मानने से समझाइस में सरलता होगी।

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य के अंतर्गत लोक गीत, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोक गाथा और लोकोक्ति का परिचय लेखक ने दिया है। ददरिया, भोजली, सखुआ नाचा, निंदाई, बिहाव गीत, करमा, जवॅारा या नवरात गीत, मायगीत, डंडा नाचा, बांस गीत, राउत नाचा गीत का परिचय सोदाहरण देते हुए चतुर्वेदी जी ने इनका विवेचन किया है। ”ददरिया” का तात्पर्य बताते हुए लेखक लिखते हैं ”छत्तीसगढ़ का श्रृंगार रसात्मक गीत है। ददरिया दादर से ढल कर आया हुआ है। यद्यपि इसके गायक निरक्षर भट्टाचार्य हैं परन्तु यह मोहक और माहिर स्वर–बद्ध तथा दादरा ताल से भी निबद्ध है।

nnfj;k

गायन की विशिष्ट स्थिति को बताते हुए चतुर्वेदी जी कहते हैं ”ददरिया में उद्दाम मांसल श्रंगार है। इसे घरों में या बस्तियों में नही गाया जाता। भरसक सावधानी रखी जाती है कि कोई आदरणीय इसे गाते हुए सुनने न पावें। ”भोजली गीत का परिचय देते हुए चतुर्वेदी जी ने गद्य में कविता की कोमलता मिला दी है” प्रकृति प्रिया ग्राम बालाएँ गेंहु ,जौ, धान एवं उड़द के दानों को टोकनी में खाद मिश्रित मिट्टी रख कर सावन शुक्ल नवमी को बों दिया करती हैं। ये उगे हुए पौधे भोजली देवी के नाम से संबोधित किए जाते है। वनश्री का मानवीकरण करके ये प्रकृति–पुजारिन

भोजली देवी के नाम से अपनी अन्तर्श्रद्धा व्यक्त करती है। भोजली के पास बैठ कर गीत गाना "भोजली सेवा" कहलाता है। हाँ तो सुनिए बालाओं की प्रार्थना, वे गंगा देवी से कह रही हैं

देवी गंगा, देवी गंगा, लहर तुरंगा, हो लहर तुरंगा।
हमरे भोजली देवी के भीजें आठों अंगा।
"हे गंगा देवी अपने तुरंग के समान उत्तार चंचल लहरों
से हमारे भोजली देवी के आठों अंग भिगा दें।

चतुर्वेदी जी ने इस कृति में छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य का सुन्दर और विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया है। लोक साहित्य संकलन की दृष्टि से इसे महत्वपूर्ण कृति कहा जा सकता है।

fu"d"k

पं. श्यामलाल चतुर्वेदी ने छत्तीसगढ़ी भाषा को संस्कार रूप एवं नयी भाव–भंगिमा देकर छत्तीसगढ़ी की विशिष्टता को संपूर्ण करने का कार्य किया है। एक शिक्षक और पत्रकार के रूप में चतुर्वेदी जी ने समाज को दिशा देने वाले पथ प्रदर्शक की भूमिका का निर्वहन बखूबी किया है। कवि के रूप में चतुर्वेदी ने छत्तीसगढ़ की सुन्दरता तथा गद्य लेखक के रूप में आपकी लेखनी ने समाज के चित्र को लेखनी के माध्यम से उकेरा है। हिन्दी और छत्तीसगढ़ी दोनों में रचनाएँ, लोक साहित्य की अच्छी समझ और शिष्ट साहित्य से उसे मिलाने की अद्भूत क्षमता, खांटी पत्रकार जैसी कई विशेषताएँ एक ही व्यक्ति में देखने को कही मिलता है तो ऐसा साहित्यकार पं. श्याम लाल चतुर्वेदी जी के अतिरिक्त और दूसरा कोई नही हो सकता है।

lanHkZ lwph

1. *ऐतिहासिक लघु खण्ड काव्य* – डॉ. विनय पाठक (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी अभिनंदन, संदर्भ. डॉ. विनय पाठक)
2. *खोलो कपाट* (पाण्डुलिपि से) पं. श्यामलाल चतुर्वेदी।
3. बादर झनिआ, *झनिआः पर्रा भर लाई* (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी)
4. करमा गीतः पाण्डुलिपि से (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी)
5. *मया के मोटरी :* पांडुलिपि से (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी)
6. मद्य निषेधः पांडुलिपि से (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी)
7. मोरिहा बादरः पर्रा भर लाई (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी)
8. किसान के कलकुतः पर्रा भर लाई (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी)
9. दिव्य स्वप्नः पांडुलिपि से (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी)
10. निबंध संकलन (राकेश)
11. भोलवा भोलाराम बनिस (भूमिका) पं. श्यामलाल चतुर्वेदी
12. भोलवा भोलाराम बनिस (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी)
13. भूमिकाः डॉ. पालेश्वर शर्माः भोलवा भोलाराम वनिस (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी)
14. पं. श्यामलाल चतुर्वेदीः आकर्षक व्यक्तित्व, रामनारायण शुक्ल (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी अभिनंदन, संदर्भ. डॉ. विनय पाठक)

15. पं. श्यामलाल चतुर्वेदीः सादगीपूर्ण व्यक्तित्व (रामनारायण शुक्ल, नवभारत 20.2.1996)
16. पं. श्यामलाल चतुर्वेदीः व्यक्तित्व और कृतित्व (श्यामसुन्दर साहू)
17. पकड़ का प्रतापः पाण्डुलिपि से (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी)
18. राम बनवासः पं. श्यामलाल चतुर्वेदी
19. उंकर अगोरा काः पर्रा भर लाई (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी)
20. छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार (गंगा प्रसाद गुप्त)
21. छत्तीसगढ़ी एवं बुदेली लोकगीतः पं. श्यामलाल चतुर्वेदी, आकाशवाणी रायपुर से प्रसारित, 7 मार्च 1982, युगधर्म, दीपावली विशेषांक।
22. छत्तीसगढ़ी परिनिष्ठित व लोकसाहित्य का तुलनात्मक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन – डॉ. विनय पाठक।
23. छत्तीसगढ़ी साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन (डॉ. विमल पाठक)
24. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्यः पाण्डुलिपि से (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी)
25. छत्तीसगदी साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन (डॉ. विमल पाठक)
26. जीत हमार निचट पक्का हेः पर्त भर लाई (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी)
27. नाटककार श्यामलाल चतुर्वेदी–नंदकिशोर तिवारी (पं. श्यामलाल चतुर्वेदी अभिनंदन ग्रंथ–डॉ. विनय पाठक)
28. आइस जब बादर करियाः पर्रा भर लाई (श्यामलाल चतुर्वेदी)

****